

दिनांक-०२/०६/२००९

# आज का सदर्चितन

# आज का सदर्चिंतन

# आज का सदर्चिंतन

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! तीसरा चरण जो अपना रह जाता है, वह संघर्ष का है। संघर्ष के बिना अवांछनीय तत्त्वों को हटाया नहीं जा सकता है। कुछ निहित स्वार्थ ऐसे होते हैं, उनकी दाढ़ में ऐसा लग जाता है अथवा किसी अपनी बेवकूफी को ऐसा प्रेस्टीज प्वाइंट बना लेते हैं कि उससे पीछे हटना ही नहीं चाहते हैं। अपनी बुद्धिमानी, अपनी अक्लमंदी और अपना अहंकार अपने घमंड को इतना ज्यादा बढ़ा लेते हैं कि अपने साथ जुड़े हुए जो विचार हैं उनका ही समर्थन करते हैं। मान लीजिए कोई बूढ़ा आदमी है, और उसने कोई गलती की, चार धाम की यात्रा करके आया और सारा पैसा फूँक करके घर में आ गया। अब उसकी गलती को बताओ तो कोई मानेगा नहीं और दूसरे गाँव वालों को भी कहेगा- हम तो मुक्ति ले आए, तुम भी मुक्ति ले आओ। उसे समझाओ तो मानता ही नहीं। कुछ आदमी इस तरह के होते हैं, जिनको जड़ कहते हैं और अपनी गलती को ही प्रेष्टीज प्वाइंट बना लेते हैं। ब्याह शादी का मामला है, नाक का प्रश्न बना लेते हैं। कहते हैं कि साहब हमारे बाप-दादे के समय ऐसी शादी होती थी। ठीक है आप जो कहते हैं वो तो सही कहते हैं आपकी बात भी सही है, ठीक माननी चाहिए। पर हम क्या कर सकते हैं? हमारे यहाँ तो ऐसा ही होता रहा है।

इस तरीके से रूढ़िवादियों से लेकर के जिनके स्वार्थ जुड़े हैं, जागीरदारों से लेकर के ताल्लुकेदारों तक और पण्डे पुजारियों से लेकर के दूसरे अवांछनीय तत्त्वों तक जिनके दाढ़ में हराम के पैसों का, हराम की आमदानी का, बेकार की बातों का चस्का लग गया है, रिश्वतखोरी का चस्का लग गया, वो सीधे तरीके से मान जाएँगे क्या? नहीं। हम जब समझाएँगे, हाँ, हाँ, हाँ करेंगे। कहेंगे कि आपने बिलकुल सही कहा, ऐसा ही होना चाहिए। फिर भ्रष्टाचार विरोधी समिति के प्रेसीडेन्ट बन जाएँगे और करेंगे पूरा भ्रष्टाचार। इस तरीके से इस तरह के लोग ही अधिकांश हैं। उनसे निपटा कैसे जाए? समझाते हैं उनको तो हमसे भी ज्यादा वो दूसरों को समझाते हैं। ऐसे समझाने से क्या असर? समझाने से क्या बात बनेगी? ऐसे जड़ लोग बातों से समझ नहीं सकते।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! रचनात्मक कार्य करने से लोगों का श्रम करने की, रचना करने की और सेवा करने की वृत्ति का विकास तो होता ही है, इस दृष्टि से तो बहुत अच्छा है, जो कार्य नहीं होते हैं, वो होने लगेंगे। जो कुछ नहीं हो रहा है, होने लगेगा। जो विकास नहीं हुआ है, होने लगेगा। लेकिन जो निहित स्वार्थ रोड़े की तरह खड़े हुए हैं, उनका क्या किया जाए? इसके लिए और कोई तरीका नहीं है। एक ही तरीका है कि उनका संघर्ष किया जाए, उनको धमकाया जाए, उनको हटाया, उनका मुकाबला किया जाए और मोर्चा लिया जाए। मोर्चा लेना जब अनिवार्य हो जाता है और कोई रास्ता नहीं रहता, तब मनुष्य का शौर्य और विवेक अवतरित होता है।

भगवान ने जब-जब अवतार लिए हैं, उस समय लिए हैं, जब ऋषियों को शिक्षण बेकार हो गया है और जब ऋषियों की रामायण की कथा और भागवत की कथा बेकार हो गयी। तब फिर भगवान को वही तीर कमान संभालना पड़ा। दसों अवतार हुए हैं, दसों अवतार में से आप प्रत्येक की गणना कर लीजिए। कच्छ-मच्छ से लेकर वाराह तक और परशुराम से लेकर रामचन्द्रजी तक। एक - दो ऐसे भी हुए हैं, जिन्होंने ज्ञान के द्वारा भी काम चला लिया। जैसे बुद्ध भगवान को अवतार। वामन का अवतार। जिन्होंने ज्ञान के द्वारा भी काम चला लिया। बाकी सारे अवतार ऐसे हुए हैं जिनको लड़ाई झगड़ा करना पड़ा है और लड़ाई-झगड़े के लिए जनता को तैयार करना पड़ा है।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अब ऐसा भी आ गया है संघर्ष जब एक घनघोर संघर्ष करना पड़ेगा अवांछनीय तत्त्वों के साथ। और ये सहज में निपटने वाले नहीं हैं। शिक्षा से मानने वाले नहीं हैं। ऐसा सन्त कहाँ से आए जो सबको ठीक कर दे। नारद जी ने एक ही बाल्मीकि डाकू को तो ठीक किया था। सारे के सारे डाकू कहाँ और ठीक हो गए थे? बाकी डाकुओं को तो उनके हिसाब से ही लगाना पड़ता है। उस हिसाब से लगाने के लिए संघर्ष की बहुत जरूरत पड़ेगी। संघर्ष करने के लिए मनुष्य और मनुष्य में टक्कर खाने की जरूरत नहीं है लेकिन विचार और विचारों में घनघोर टक्कर होने ही वाली है। और ये महाभारत जिसका मैं वर्णन करता रहा और ये कहता रहा कि युग परिवर्तन के साथ-साथ एक बहुत भारी महाभारत की संभावना जुड़ी हुई है। वो महाभारत लड़ाई -झगड़े के बारे में मैं नहीं कहता, तोप-तलवारों के बारे में नहीं कहता। तोप-तलवार वाले जो युद्ध होते हैं उससे कोई समस्या का हल नहीं होता बल्कि नयी-नयी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। कभी भी लड़ाई हुई उससे नयी समस्याएँ पैदा हो गयी जिससे समाज का ढाँचा लड़खड़ा गया।

# आज का सच्चिंतन

मित्रो ! भोजन, पकाने, परोसने, खाने में साधारण रीति से हाथ धो लेना भर पर्याप्त होता है किन्तु इन्जेक्शन की सुई का प्रयोग करते समय उसकी शुद्धि के लिए खौलते पानी का, कीटाणुनाशक रसायनों का प्रयोग करना पड़ता है। मिट्टी के खिलौने बनाने में भौंडे साँचे भी काम दे जाते हैं। पर, घड़ी के पुर्जे ढालने के लिए साँचे अत्यधिक सही बनाये जाते हैं। लोक सेवी कार्यकर्ताओं में कुछ तो ऐसे होते हैं जो वस्तुओं का निर्माण, वितरण करते हैं, उनके स्तर में कमी हो तो साधनों का घटिया होना, महँगा पड़ना जैसी वे हानियाँ ही होती हैं जिन्हें आसानी से सहन या दरगुजर किया जा सके किन्तु भावनात्मक नवनिर्माण का कार्य हाथ में लेने वालों का स्तर घटिया रहे तो काम बनता ही नहीं। सभी जानते हैं कि दूध में एक मक्खी पड़ जाने पर पीने वाले को लाभ के स्थान पर उलटी होने का नया संकट सहन करना पड़ता है। कप्तान की तनिक सी चूक का परिणाम समूची सेना के विनाश का ही नहीं, उस देश का भविष्य अंधकारमय बना देने का भी निमित्त कारण बनता है। जिन्हें नेतृत्व करना है, मार्गदर्शक की भूमिका निभानी है उन्हें सामान्य लोगों के स्तर का नहीं वरन् कहीं अधिक ऊँचा होना चाहिए।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! युगशिल्पियों को बहुत कुछ करना और कराना है। किन्तु स्मरण रहे, अपना निर्धारण, प्रयास एवं कार्य क्षेत्र व्यक्तियों को परिष्कृत करना है। इसी से देव समाज की संरचना संभव होगी। साँचे इसी क्षेत्र के तैयार करने होंगे ताकि उनके सहारे नये खिलौने, पुर्जे ढाला जा सकना संभव हो सके। यदि यह न बन पड़ा तो उस कथानक की पुनरावृत्ति होती रहेगी जिसमें चूहों की पंचायत ने बिल्ली के गले में घंटी बाँध देने का फैसला तो किया पर उस कार्य को करने के लिए कोई आगे न आया फलतः पंचायत विसर्जित हो गयी। युग-सृजन के लिए विचारों का निर्माण और उनका लेखनी, वाणी एवं प्रचार माध्यमों से विस्तार करने की आवश्यकता से कोई इन्कार नहीं करता, पर गाड़ी तब तक दल-दलों में फँसी पड़ी रहेगी जब तक कि आदर्शवादिता अपनाने वालों के उदाहरण सामने न आयेंगे। हनुमान ने आगे आकर रीछ-वानरों में अनुकरण का उत्साह उत्पन्न किया। बुद्ध और गाँधी ने प्रवचनों से नहीं अपने चरित्र को आगे रखकर अनुगामियों का पथ प्रशस्त किया होगा। महामानवों को अपनी जीवनचर्या उस प्रकार की विनिर्मित करनी पड़ती है, जिससे दूसरों को प्रभावित होने, प्रेरणा ग्रहण करने और अनुगमन का साहस उपलब्ध करने का पथ प्रशस्त हो।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हिन्दुस्तान में महाभारत हुआ। महाभारत के बाद में वो परिस्थितियाँ आ गयीं जो अब तक सँभलने में नहीं आ रही हैं। द्वितीय विश्व युद्ध हुआ, उसमें कोई व्यक्ति है क्या जिसको हम मार डालेंगे। लाखों मनुष्य मार डाले जाते हैं, लाखों मनुष्यों की हत्या हो जाती है, और लाखों मनुष्यों का न जाने क्या से क्या हो जाता है। उससे सारे समाज में विच्छृंखलता पैदा हो जाती हैं। लाभ नहीं होता है। इसलिए भावी युद्ध तो होगा ही लेकिन तमंचों का, तोपों का ऐटम बमों का युद्ध होगा ऐसा मैं कुछ नहीं कहता। होता होगा तो होगा, न होता होगा न होगा। लेकिन सतयुग को लाने के लिए जिस महायुद्ध की जरूरत है, महाभारत की जरूरत है वो कुछ अजीब किस्म का होगा और उस किस्म का होगा जिसमें हर विचारशील व्यक्ति को हर अविवेकी व्यक्ति के साथ लड़ना-झगड़ना पड़ेगा और जद्दोजहद करनी पड़ेगी। समझाने के साथ हम काम करते हैं और उसकी शुरुआत पहले विरोध के रूप में होगी। जो आदमी गलत हैं, गलत काम करते हैं, उनका हमको असहयोग करना चाहिए और विरोध भी।

मित्रो ! हम क्यों पैदा हुए हैं, इसका उत्तर शायद हम न दे सकें, किंतु जब पैदा हो गए हैं, तो हमें जीवन में क्या करना चाहिए, इस प्रश्न पर अब आसानी से सोचा जा सकता है। जब हम इस समाज के सदस्य हैं, तो हमें अपनी सदस्यता का चंदा देना चाहिए, जो हमारा अनिवार्य कर्तव्य है। समाज को यह चंदा केवल धन के रूप में नहीं दिया जा सकता। इस चंदे के रूप में तो हमें अपनी प्रतिभा, परिश्रम और त्याग के बल पर समाज को ऐसी चीज देनी चाहिए, जिससे समस्त समाज का जीवन भविष्य में सुखमय और उन्नतिशील बन सके।

अपने समस्त जीवन के कार्यकलापों का सिंहावलोकन करके यदि उसे यह अनुभव होता है कि उसके जीवन से समाज को कोई हानि नहीं हुई, लाभ ही हुआ है, तो उसका जीवन सार्थक है। यदि किसी की मृत्यु पर लोग संतोष की साँस लेने बजाए, एक टंडी आह भरकर कहें कि एक भला आदमी चला गया, तो समझना चाहिए कि वह अपना कर्तव्य पूरा करके गया है। कौन कितना करता है, यह साधनों, सामर्थ्य और परिस्थितियों पर निर्भर है। अपने साधनों और सामर्थ्य के अनुसार किसी रूप में समाज की सेवा करके आप भी अपने समाज के ऋण से उऋण हो लीजिए, ताकि अंत समय में आप यह संतोष प्राप्त कर सकें कि आपने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है।

# गायत्री जयंती का विशेष संदेश

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! तीसरा चरण जो अपना रह जाता है, वह संघर्ष का है। संघर्ष के बिना अवांछनीय तत्त्वों को हटाया नहीं जा सकता है। कुछ निहित स्वार्थ ऐसे होते हैं, उनकी दाढ़ में ऐसा लग जाता है अथवा किसी अपनी बेवकूफी को ऐसा प्रेस्टीज प्वाइंट बना लेते हैं कि उससे पीछे हटना ही नहीं चाहते हैं। अपनी बुद्धिमानी, अपनी अक्लमंदी और अपना अहंकार अपने घमंड को इतना ज्यादा बढ़ा लेते हैं कि अपने साथ जुड़े हुए जो विचार हैं उनका ही समर्थन करते हैं। मान लीजिए कोई बूढ़ा आदमी है, और उसने कोई गलती की, चार धाम की यात्रा करके आया और सारा पैसा फूँक करके घर में आ गया। अब उसकी गलती को बताओ तो कोई मानेगा नहीं और दूसरे गाँव वालों को भी कहेगा- हम तो मुक्ति ले आए, तुम भी मुक्ति ले आओ। उसे समझाओ तो मानता ही नहीं। कुछ आदमी इस तरह के होते हैं, जिनको जड़ कहते हैं और अपनी गलती को ही प्रेष्टीज प्वाइंट बना लेते हैं। ब्याह शादी का मामला है, नाक का प्रश्न बना लेते हैं। कहते हैं कि साहब हमारे बाप-दादे के समय ऐसी शादी होती थी। ठीक है आप जो कहते हैं वो तो सही कहते हैं आपकी बात भी सही है, ठीक माननी चाहिए। पर हम क्या कर सकते हैं? हमारे यहाँ तो ऐसा ही होता रहा है।

इस तरीके से रूढ़िवादियों से लेकर के जिनके स्वार्थ जुड़े हैं, जागीरदारों से लेकर के ताल्लुकेदारों तक और पण्डे पुजारियों से लेकर के दूसरे अवांछनीय तत्त्वों तक जिनके दाढ़ में हराम के पैसों का, हराम की आमदानी का, बेकार की बातों का चस्का लग गया है, रिश्वतखोरी का चस्का लग गया, वो सीधे तरीके से मान जाएँगे क्या? नहीं। हम जब समझाएंगे, हाँ, हाँ, हाँ करेंगे। कहेंगे कि आपने बिलकुल सही कहा, ऐसा ही होना चाहिए। फिर भ्रष्टाचार विरोधी समिति के प्रेसीडेन्ट बन जाएँगे और करेंगे पूरा भ्रष्टाचार। इस तरीके से इस तरह के लोग ही अधिकांश हैं। उनसे निपटा कैसे जाए? समझाते हैं उनको तो हमसे भी ज्यादा वो दूसरों को समझाते हैं। ऐसे समझाने से क्या असर? समझाने से क्या बात बनेगी? ऐसे जड़ लोग बातों से समझ नहीं सकते।

# आज का सच्चिंतन

मनुष्य के सारे ज्ञान, विज्ञान और कला का उद्देश्य सुख और शान्ति है। खेद है कि अब तक जितना पसीना मनुष्य ने इस सब की उन्नति में बहाया है, उसके बदले में बिल्कुल उल्टी चीजें उसे प्राप्त हुई हैं। वे हैं- चिन्ता, दुःख, विग्रह और अशान्ति। आज का साहित्य, जिसका सृजन आत्म संतोष के लिए होना चाहिए था, मन में प्रायः निराशा और अशान्ति का बीज बोता है और विज्ञान ने जिसकी उन्नति से सुख के अनेक साधन उपलब्ध हो सकते हैं, हमें दिया है संघर्ष की प्रवृत्ति और संहार की चेष्टा। आधुनिक सभ्यता के परिणाम स्वरूप ही मनुष्य ने अनेक शारीरिक रोगों के साथ-साथ मानसिक रोग भी प्राप्त कर लिये हैं। मानसिक रोगों में सबसे अधिक दुःखदायी है-दुश्चिन्ताओं का रोग। इसलिये हमें निम्न बातें सदैव याद रखनी चाहिए:-

- (१) चिन्ता करने से हृदय दुर्बल पड़ जाता है। उसकी स्वाभाविक गति नष्ट हो जाती है।
- (२) रक्त-चाप की बीमारी भी अत्यधिक चिन्ता के कारण होती है।
- (३) वायु प्रकोप, शूल और गठियाबाई जैसे भीषण रोग जिसे मोल लेने हों, वह चिन्ता करें।
- (४) अपने पेट को ठीक रखना है, तो चिन्ता मत करो।
- (५) चिन्ता के कारण ही जुकाम और खाँसी जैसे साधारण रोग पैदा होते रहते हैं।
- (६) दुश्चिन्ता का कुप्रभाव शरीर को विकसित करने वाली ग्रन्थियाँ पर पड़ता है।
- (७) चिन्ता के कारण भोजन में अरुचि और पाचन-क्रिया गड़बड़ हो जाती है।

(क्रमशः...)

# आज का सच्चिंतन

मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु रोग-क्षय से पीड़ित रोगियों में सबसे अधिक संख्या उनकी है जिन्होंने रात दिन दुश्चिन्ताएँ करके अपने शत्रु को बुलाया है। चिन्ता पीड़ित व्यक्ति के लक्षण:-

- (१) चिन्तित व्यक्ति हमेशा दुःखी बना रहता है। उसके पेट में और सिर में प्रायः दर्द बना रहता है। स्वास्थ्य के मुख्य आधारभूत अंग पेट और सिर ही है और यह दोनों ही दुश्चिन्ता करने से भारी बने रहते हैं।
- (२) दुश्चिन्ता करने वाला व्यक्ति कायर हो जाता है और कायरता की यह प्रवृत्ति विशेष रूप से उन मौकों पर परिलक्षित होती है जब उसे बाह्य संसार की वास्तविकता का सामना करना पड़ता है। उसे सदैव भयंकर हानि का खतरा अनुभव हुआ करता है। कभी कभी तो वह अकारण ही भयभीत हो जाया करता है।
- (३) चिन्ताशील व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है। दूसरों के प्रति उस के मन में संदेह बना ही रहता है। चाहे जितना उसका उत्साहवर्धन किया जाय, उसे असफलता ही नजर आती है।
- (४) उसमें आवश्यकता से अधिक झुंझलाने की आदत पैदा हो जाती है। कभी कभी उसके साथ अन्य लोगों का उठना-बैठना भी कठिन हो जाता है। वह अपनी अस्थिरता को छिपाने की चेष्टा करता है पर उसकी चेष्टा बेकार सिद्ध होती है। जरा-जरा सी बात पर उसका खून खौल उठता है।
- (५) वह अत्यन्त अनुभूतिशील और आवश्यकता से अधिक सम्मान प्रिय होता है। इसलिये समाज के प्रति उसका दृष्टिकोण गलत और अतिरंजित होता है। वह अपने ही मित्रों, प्रियजनों, परिजनों और परिवारजनों के कार्यों और कथन का उल्टा अर्थ लगाता है, कभी हर बात में वह अपना ही दोष समझता है। इस प्रकार वह अपना जीवन बहुत दुःखी बना लेता है।
- (६) वह प्रायः नैराश्यपूर्ण भावों से ओत-प्रोत रहता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि उसे निराशा में ही आनन्द आता है, अन्यथा वह उन तामसिक भावों से इतना लीन क्यों रहता? पर चिन्तापीड़ित व्यक्ति उन भावों से छुटकारा पाना चाहता है, वह उनसे पीछा छुड़ाने में बिल्कुल असमर्थ हो जाता है।
- (७) चिन्ता करने से बड़ी जल्दी थकावट आ जाती है। ऐसा जान पड़ता है कि शरीर और मन दोनों थक गये हों। ऐसी थकावट हर समय बनी रहती है। जहाँ चिन्ता है वहाँ थकावट अवश्य होगी।

क्रमशः....

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! रचनात्मक कार्य करने से लोगों का श्रम करने की, रचना करने की और सेवा करने की वृत्ति का विकास तो होता ही है, इस दृष्टि से तो बहुत अच्छा है, जो कार्य नहीं होते हैं, वो होने लगेंगे। जो कुछ नहीं हो रहा है, होने लगेगा। जो विकास नहीं हुआ है, होने लगेगा। लेकिन जो निहित स्वार्थ रोड़े की तरह खड़े हुए हैं, उनका क्या किया जाए? इसके लिए और कोई तरीका नहीं है। एक ही तरीका है कि उनका संघर्ष किया जाए, उनको धमकाया जाए, उनको हटाया, उनका मुकाबला किया जाए और मोर्चा लिया जाए। मोर्चा लेना जब अनिवार्य हो जाता है और कोई रास्ता नहीं रहता, तब मनुष्य का शौर्य और विवेक अवतरित होता है।

भगवान ने जब-जब अवतार लिए हैं, उस समय लिए हैं, जब ऋषियों का शिक्षण बेकार हो गया है और जब ऋषियों की रामायण की कथा और भागवत की कथा बेकार हो गयी। तब फिर भगवान को वही तीर कमान संभालना पड़ा। दसों अवतार हुए हैं, दसों अवतार में से आप प्रत्येक की गणना कर लीजिए। कच्छ-मच्छ से लेकर वाराह तक और परशुराम से लेकर रामचन्द्रजी तक। एक - दो ऐसे भी हुए हैं, जिन्होंने ज्ञान के द्वारा भी काम चला लिया। जैसे बुद्ध भगवान का अवतार। वामन का अवतार। जिन्होंने ज्ञान के द्वारा भी काम चला लिया। बाकी सारे अवतार ऐसे हुए हैं जिनको लड़ाई झगड़ा करना पड़ा है और लड़ाई-झगड़े के लिए जनता को तैयार करना पड़ा है।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अब ऐसा भी आ गया है संघर्ष जब एक घनघोर संघर्ष करना पड़ेगा अवांछनीय तत्त्वों के साथ। और ये सहज में निपटने वाले नहीं हैं। शिक्षा से मानने वाले नहीं हैं। ऐसा सन्त कहाँ से आए जो सबको ठीक कर दे। नारद जी ने एक ही बाल्मीकि डाकू को तो ठीक किया था। सारे के सारे डाकू कहाँ और ठीक हो गए थे? बाकी डाकुओं को तो उनके हिसाब से ही लगाना पड़ता है। उस हिसाब से लगाने के लिए संघर्ष की बहुत जरूरत पड़ेगी। संघर्ष करने के लिए मनुष्य और मनुष्य में टक्कर खाने की जरूरत नहीं है लेकिन विचार और विचारों में घनघोर टक्कर होने ही वाली है। और ये महाभारत जिसका मैं वर्णन करता रहा और ये कहता रहा कि युग परिवर्तन के साथ-साथ एक बहुत भारी महाभारत की संभावना जुड़ी हुई है। वो महाभारत लड़ाई -झगड़े के बारे में मैं नहीं कहता, तोप-तलवारों के बारे में नहीं कहता। तोप-तलवार वाले जो युद्ध होते हैं उससे कोई समस्या का हल नहीं होता बल्कि नयी-नयी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। कभी भी लड़ाई हुई उससे नयी समस्याएँ पैदा हो गयी जिससे समाज का ढाँचा लड़खड़ा गया।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हमारा मन है कि हमारे पास दस हजार ऐसे व्यक्ति हों, जिनकी हम माला पहनें, जो हमारे साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलें। हमारी व उनकी एक आवाज हो, एक दिशा हो तथा लगातार मिलकर लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। उन्हें किसी बात का डर या भय न हो। इस वर्ष हमारी इच्छा दस हजार हीरे का हार पहनने की है। जब हमारा जुलूस निकले, तो जनता यह समझे कि यह बहुत मालदार आदमी है, बहुत शानदार आदमी है, वजनदार आदमी है।

यहाँ दस हजार हीरों से मेरा मतलब है कि दस हजार ऐसे साथी हो जाएँ, जो नियमित रूप से हमारे कार्य अर्थात् मिशन के लिए समयदान दे सकें। पैसे की इच्छा नहीं है। इसका मतलब यह है कि हमारे हाथ-पाँव मजबूत हो जाएँ। हाथ-पाँव से हमारा मतलब आपसे है। आप हमारे चलते-फिरते हाड़-माँस के शक्तिपीठ बन जाएँ। हमने जो उम्मीद शक्तिपीठों से लगाई थी, वह आप स्वयं पूरा करना शुरू कर दें। हमें ज्ञानरथ के लिए नौकर नहीं चाहिए। हमें इसके लिए आपका समयदान चाहिए। विवेकानंद, गाँधी, विनोबा का काम स्वयं उन्होंने किया। इसी तरह यह काम आपको करने होंगे। आपके पास चौबीस घंटे हैं। आठ घंटे काम के लिए, सात घंटे सोने के लिए, पाँच घंटे नित्य काम के लिए रख लें, तो भी आपके पास चार घंटे बचते हैं। आपको नियमित रूप से चार घंटे नित्य मिशन के लिए, समाज के लिए, भगवान् के लिए देना चाहिए।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पूजा-अर्घ्य में जल, अक्षत, पुष्प, चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य आदि को सँजोकर रखा जाता है। इसका तात्पर्य उन माध्यम संकेतों को ध्यान में रखते हुए अपनी रीति-नीति का निर्धारण करना है। जल का अर्थ है-शीतलता। अमन शान्त, सौम्य और संतुलित रहें। धूप के पीछे दिशा निर्देशन यह है कि हम वातावरण को सत्प्रवृत्तियों से भरा-पूरा सुगंधित बनाएँ। दीपक का संकेत है कि ज्ञान का प्रकाश व्यापक बनाने के लिए हम अपने साधनों विभूतियों में से कुछ भी उत्सर्ग करने के लिए तैयार रहें। चंदन अर्थात् हँसते-हँसाते, खिलते-खिलाते रहने की प्रकृति अपना लेना। अक्षत अर्थात् अपने उपार्जन का एक अंश दिव्य प्रयोजनों के लिए नियोजित करने में अटूट निष्ठा बनाए रखना, उदार बने रहना आदि। भगवान को इन वस्तुओं की कोई आवश्यकता पड़ रही हो, ऐसी बात नहीं है। इन प्रतीक-समर्पणों के माध्यम से हम अपने को ही प्रशिक्षित करते हैं कि देवत्व के अवतरण हेतु व्यक्तित्व को पात्रता से सुसज्जित रखें।

गार्ड लाल और हरी झण्डियाँ दिखाता है। यों रंगों का अपना कोई महत्त्व नहीं, पर झण्डियाँ देखने पर जो खड़ा होने और चल पड़ने का संकेत मिलता है, उसी को समझने और क्रियान्वित करने पर रेल व्यवस्था बन पड़ती है। उपासनापरक क्रिया-कृत्यों में, भगवान् को रिझाने-फुसलाने सा पात्रता प्रदर्शित किए बिना, पुरुषार्थ अपनाए बिना मनचाही कामनाएँ पूरी करा लेने जैसा कुछ भी सन्निहित नहीं है। आमतौर से लोग भ्रम में ही उलझे रहते हैं। फिर चाहे अनुनय-विनय जैसी कुछ भी उछल-कूद क्यों न की जाती रहे।

Â¸èÙ - ¸Ü × â¸ÿ¸Ù Ì ¸ - ¸, Ö¸á¸ ¥¸Ù ¸Ü¸Â - ¸ ×ã¸Žß  
 Ì ¸ âÖè â×Û¸ Ì Í ¥¸Ù ©â ÂÚ¸¸ã Ì - ØÁ×¸Ù ¸×ÜÁÜ  
 - ¸Ù ¸Ù Â»ã â¸¸L ¸ MÂ â ÂÚ¸ - ¸Ù ÜÌ Í Ð ÂÚ¸¸ã Ì ¸  
 - ¸è ¥¸Áè¸ß - ¸ã Ì ¸à¸ÿ¸¸ Í Ø ¸ - ¸ ¥¸ÖÖ¸ß - ¸ ÎÜ-  
 Î¸ÿ¸±¸ - ¸ MÂ × Á¸ Î ¸ Î Ø ¸ - ¸Ù Ì Í, ßãè ¥Â¸Ù»ãè,  
 ¸× Ì ÃØØè ÁèßÜ ÁèÜ ß¸Ü Ö¸r¸±¸ - ¸ ¸Ü° ÂØ¸#ã¸ Ì è  
 Í è Ð ¸à¸ÿ¸-â¸ÿ¸Ù Ì ¸ - ¸ ¸Ü° - ¸§ ¸ßà¸á Ø¸ÁÜ¸ Ø¸  
 ÃØßS Í ¸ Üãè ÖÜ¸Üè ÂÇ Ì è Í è Ð

âÁèßÙè çß l æ - ææ Îæçø^ß «æçá ß» - æ ×Ùèáè ©Ææ Ì  
 Í Ð Áæ ¥ç Ĩ - ææÚè ãæ Ì Í, ©«ã ¥ÂÙ ¥æÿæ×æ, »Læ - æÛæ  
 °ß ¥æÚ±ø - ææ × ŒÛæ Ì Í Ð ©Âøž Ì ßæ Ì æßÚ±æ × ©Âøž Ì  
 ¥žøîø - æè â×çç Ì øæÁÙæ çÛæ Ì %æÐ

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आत्मपरिवर्तन के साथ-साथ यही जाग्रत आत्माएँ विश्व परिवर्तन की भूमिका प्रस्तुत करेंगी। प्रकाशवान ही प्रकाश दे सकता है। आग से आग उत्पन्न होती है। जागा हुआ ही दूसरों को जगा सकता है। जागरण की भूमिका जाग्रत आत्माएँ ही निभाएँगी। आत्मपरिवर्तन की चिनगारियाँ ही युग परिवर्तन के प्रचण्ड दावानल का रूप धारण करेंगी। यही सब तो इन दिनों हो रहा है। जाग्रत आत्माओं में एक असाधारण हलचल इन दिनों उठ रही है। उनकी अन्तरात्मा उन्हें पग-पग पर बेचैन कर रही है, ढर्रे का पशु जीवन नहीं जिएँगे, पेट और प्रजनन के लिए-वासना और तृष्णा के लिए जिन्दगी के दिन पूरे करने वाले नरकीटों की पंक्ति में नहीं खड़े रहेंगे, ईश्वर के अरमान और उद्देश्य को निरर्थक नहीं बनने देंगे, लोगों का अनुकरण नहीं करेंगे, उनके लिए स्वतः अनुकरणीय आदर्श बनकर खड़े होंगे। यह आन्तरिक समुद्र मन्थन इन दिनों हर जीवित और जाग्रत आत्मा के अन्दर इतनी तेजी से चल रहा है कि वे सोच नहीं पा रहे कि आखिर यह हो क्या रहा है वे पुराने ही हैं पर भीतर कौन घुस पड़ा जो उन्हें ऊँचा सोचने के लिए ही नहीं, ऊँचा करने के लिए भी विवश, बेचैन कर रहा है। निश्चित रूप से यह ईश्वरीय प्रेरणा का अवतरण है।

# आज का सद्चित्तन

मित्रो ! “इस आड़े वक्त में संस्कृति ने ब्राह्मणत्व को पुकारा है। यदि वह कहीं जीवित हो, तो आगे आये। जाति और देश में हम वर्ण का सम्बन्ध नहीं जोड़ते। ब्राह्मण हम उन्हें कहते हैं कि जिनके मन में आदर्शवादिता के लिए इतना दर्द मौजूद हो कि वह अपनी वासना-तृष्णा से बचाकर शक्तियों का एक अंश अध्यात्म की प्राणरक्षा के लिए लगा सकें।”

“ब्राह्मणत्व एक साधना है। मनुष्यता का सर्वोच्च सोपान है। इस साधना की ओर उन्मुख होने वाले क्षत्रिय विश्वामित्र और शूद्र ऐतरेय भी ब्राह्मण हो जाते हैं। साधना से विमुख होने पर ब्राह्मण कुमार अजामिल और धुंधकारी शूद्र हो गए। सही तो है, जन्म से कोई कब ब्राह्मण हुआ है? ब्राह्मण वह जो समाज से कम से कम लेकर उसे अधिकतम दे। स्वयं के तप, विचार और आदर्श जीवन के द्वारा अनेकों को सुपथ पर चलना सिखाए।”

“हमारा जीवन-प्रयोग प्रत्यक्ष है। हमने सारे जीवन ब्राह्मण बनने की साधना की। इसके लिए पल-पल तपे, इंच-इंच बढ़े। जिंदगी में यज्ञोपवीत संस्कार का वह क्षण कभी नहीं भूला, जब महामना मदनमोहन मालवीय ने गायत्री महामंत्र सुनाने के साथ ही कहा था-गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है।”

“ब्राह्मण की सही माने में पूँजी तो विद्या और तप है-जो उसे गायत्री मंत्र की साधना से मिलती है। भौतिक सुविधाओं के मामले में तो उसे सर्वथा अपरिग्रही होना चाहिए।”

# आज का सद्चिंतन

**मित्रों ! अमृत पारस कल्पवृक्ष का जागरण :-** जनसामान्य को केवल धारा से जोड़ने के लिए यंत्रवत् साधना भी करने दी जाय; किन्तु युगऋषि के निर्देश के अनुसार प्राणवानों-प्रगल्भों को गायत्री विद्या के गहन प्रयोग से अपने अन्दर अमृत, पारस एवं कल्पवृक्ष जाग्रत् करने के तत्त्वज्ञान को हृदयंगम कराया जाय।

सद्ज्ञान ही वह अमृत है, जिसे पाकर साधक स्वयं को अमर आत्मचेतना के रूप में अनुभव करने लगता है। फिर उसके सारे भय दूर हो जाते हैं और वह ईश्वर के अनुरूप न्यायनिष्ठ, नैतिक जीवन जीने के लिए अपने अंदर क्रमशः क्षमता बढ़ती अनुभव करता है।

साधना के अन्तर्गत जप-अनुष्ठान के साथ स्वाध्याय-अनुष्ठान भी जोड़े जायें, जप की संख्या भले ही कुछ कम कर दी जाय। जितना समय जप में लगता है उतना ही अथवा कम से कम उसका आधा समय 'स्वाध्याय-तप' में लगाने के संकल्प किए कराये जायें। पात्र के अनुरूप उन्हें गायत्री विद्या संबंधी सैट, क्रान्तिधर्मी साहित्य अथवा प्रज्ञा पुराण (प्रज्ञोपनिषद्) के स्वाध्याय के लिए कहा जाय। इससे अंतःकरण के ज्ञान के स्रोत जीवन्त हो उठेंगे। अमृत पान की प्रत्यक्ष अनुभूति होगी।

गुरुवर ने प्रेम को पारस कहा है। प्रेम जिसे छुला दिया जाय, वही अपना बन जाता है। अपना बन गया, मतलब सोना बन गया। गुरुदेव ने इसे ही अपनी-अपनी उपासना माना है।

तप ही वह कल्पवृक्ष है, जिसकी छाया में, प्रभाव में आने से श्रेष्ठ कामनाएँ क्रमशः विचार बनती हैं, संकल्प में ढलती हैं और फलित होने लगती हैं। खिलाड़ी, संगीतकार, वैज्ञानिक से लेकर अध्यात्मवेत्ताओं को अपने-अपने ढंग से तपः साधना का वरण करना ही पड़ता है।

समय आ गया है कि हम अपनी साधना को उच्चस्तरीय बनायें। समय, प्रकृति, ऋषितंत्र, युगशक्ति सब हमारे सहयोग के लिए तैयार हैं। हमें अपने संकल्पों और प्रयासों का स्तर थोड़ा उन्नत करना है। जितना उन्नत हम इन्हें कर सकेंगे, उसी अनुपात में नयी शक्ति का संचार एवं अनुदानों का लाभ हम प्राप्त कर सकेंगे।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जब आवेश की ऋतु आती है तो जटायु जैसे जीर्ण-शीर्ण भी रावण जैसे महायोद्धा के साथ निर्भय होकर लड़ पड़ते हैं। गिलहरी श्रद्धामय-श्रमदान देने लगती है और सर्वथा निर्धन शबरी अपने संचित बेरों को देने के लिए भाव-विभोर होती है। सुदामा को भी तो अपनी चावल की पोटली समर्पित करने में संकोच बाधक नहीं हुआ था। यह अदृश्य में लहराता दैवी-प्रवाह है, जो नव-सृजन के देवता की झोली में समयदान, अंशदान ही नहीं, अधिक साहस जुटाकर हरिश्चंद्र की तरह अपना राजपाट और निज का, स्त्री-बच्चों का शरीर तक बेचने में आगा-पीछा नहीं सोचता। दैवी आवेश जिस पर भी आता है, उसे बढ़-चढ़ कर आदर्शों के लिए समर्पण कर गुजरे बिना चैन ही नहीं पड़ता।

यही है महाकाल की वह अदृश्य अग्नि शिखा, जो चर्मचक्षुओं से तो नहीं देखी जा सकती है, पर हर जीवंत व्यक्ति से समय की पुकार कुछ महत्त्वपूर्ण पुरुषार्थ कराए बिना छोड़ने वाली नहीं है। ऐसे लोगों का समुदाय जब मिलजुलकर अवांछनीयताओं के विरुद्ध निर्णायक युद्ध छेड़ेगा और विश्वकर्मा की तरह नई दुनिया बनाकर खड़ी करेगा, तो अंधे भी देखेंगे कि कोई चमत्कार हुआ। पतन के गर्त में तेजी से गिरने वाला वातावरण किसी वेधशाला से छोड़े गए उपग्रह की तरह ऊँचा उठकर अपनी नियत कक्षा में द्रुतगति से परिभ्रमण करने लगेगा।

# आज का सच्चिन्तन

मित्रों ! दान में सर्वोपरि ज्ञानदान को माना जाता है। इसे ब्रह्मयज्ञ भी कहते हैं। जिन प्रयत्नों से सद्भावनाएँ और सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ सकें, उसी को सच्चा परमार्थ कहना चाहिए। सत् चिन्तन के अभाव में ही लोग अनेकों दुर्गुण अपनाते और पतन-पराभव के गर्त में गिरते हैं। यदि सही चिन्तन कर सकने का पथ प्रशस्त हो सके तो समझना चाहिए कि सर्व-समर्थ मनुष्य को अपनी समस्याएँ आप हल करने का मार्ग मिल गया। अपंगों, असमर्थों या दुर्घटनाग्रस्तों को छोड़कर कोई ऐसा नहीं है, जो सही चिन्तन करने का मार्ग मिल जाने पर ऊँचा उठ न सके, आगे न बढ़ सकें, अपनी समस्याओं को आप हल न कर सके। इसलिए आत्मिक प्रगति के लिए प्रधानतया यही नीति अपनानी चाहिए कि लोकमानस के परिष्कार के लिए, सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए अपनी योग्यता और परिस्थिति के अनुसार भरसक प्रयत्न किया जाय।

कहा जाता रहा है कि विचारक्रान्ति की, ज्ञान की साधना में सभी दूरदर्शी, विवेकवानों को लगाना चाहिए। इसी निमित्त लेखनी, वाणी तथा दृश्य-श्रव्य आधारों का ऐसा प्रयोग करना चाहिए, जिससे सर्व साधारण को युगधर्म पहचानने और कार्यान्वित करने की प्रेरणा मिल सके। सर्वजनीन और सार्वभौम ज्ञानयज्ञ ही आज का सर्वश्रेष्ठ परमार्थ है।

# आज का सच्चिदानन्द

मित्रों ! जीवन क्रम को योजनाबद्ध रीति से जी सकना अपने ढंग की अति महत्वपूर्ण कला कौशल है। जिन्हें यह आता है, वे गई-गुजरी परिस्थितियों और कठिनाइयों के बीच रहते हुए भी प्रगति का मार्ग ढूँढ निकालते हैं और उस पर समझदारी के साथ चलते हुए उन्नति के उस शिखर तक जा पहुँचते हैं, जिसमें सफलता, सम्पन्नता और प्रतिष्ठा का आनन्द भरा रहता है।

स्वच्छता परमात्मा का सानिध्य है तथा निर्मलता आत्मा का प्रकाश है। आन्तरिक स्वच्छता का आधार भी शारीरिक और बाह्य स्वच्छता ही हैं। आन्तरिक शुचिता एवं स्वच्छता का अभ्यास बाह्य पवित्रता, सुसज्जा और स्वच्छता अपनाकर ही सिद्ध किया जा सकता है क्योंकि बाह्य स्वच्छता ही आन्तरिक स्वच्छता का हेतु है। यदि परिवार के हर सदस्य अपनी तथा अपने पास-पड़ोस की गन्दगी दूर करके उसके स्थान पर स्वच्छता एवं पवित्रता को पूरी तरह स्थापित कर ले, तो काल्पनिक स्वर्ग के स्थान पर जीवन के यथार्थ स्वर्ग को धरती पर और अपने घर पर ही देख सकते हैं। सुसज्जा, स्वच्छता एवं पवित्रता की पराकाष्ठा ही वह मनुष्यता है, जिसकी परिणति देवत्व में होना असंदिग्ध है। असली रूप तो अपने गुणों से झलकता है। अपनी छाया गुणवान होकर डालनी चाहिए, रूपवान होकर नहीं।

# आज का सच्चिंतन

मित्रों ! अपने को दीन-हीन, दयनीय, दरिद्र, अनगढ़, अभागा, बाधित समझने वालों को वस्तुतः यही अनुभव होता है कि वे दुरूह परिस्थितियों से जकड़े हुए हैं, किन्तु जिनकी मान्यता यह है कि उनमें उठने और महानता की मज्जिल तक जा पहुँचने की शक्ति है, वे प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदल सकने में भी समर्थ होते हैं। उठने में सहायता करने का श्रेय किसी को भी दिया जा सकता है और गिरने में गिराने का दोषारोपण भी किसी पर भी किया जा सकता है, पर वस्तुस्थिति ऐसी है कि यदि अपने ही व्यक्तित्व और कर्तृत्व को ऊँचा उठाने और गिराने के लिए उत्तरदायी ठहराया जाए, तो यह मान्यता सबसे अधिक सही होगी।

गई-गुजरी स्थिति पर आँसू बहाए जा सकें, तो अनुचित नहीं, उनकी सहायता करना भी मानवोचित कर्तव्य है, पर यह भुला नहीं दिया जाना चाहिए कि जब तक तथाकथित असहाय कहाने वालों का मनोबल न उठाया जाएगा, उनमें पुरुषार्थपूर्वक आगे बढ़ने का संकल्प न उभारा जाएगा, तब तक ऊपर से थोपी गई सहायता कोई चिरस्थायी परिणाम उत्पन्न न कर सकेगी। उत्कण्ठा का चुम्बकत्व अपने आप में इतना शक्तिशाली है कि उसके सहारे निश्चित रूप से प्रगति का पथ-प्रशस्त किया जा सकता है। इस उक्ति को भी ध्यान में रखे ही रहना चाहिए कि “ईश्वर मात्र उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।” दीन-दुर्बलों को तो प्रकृति भी अपनी मौत अपने आन मरने के लिए उपेक्षापूर्वक छोड़ती और मुँह मोड़कर अपनी राह चल पड़ती देखी गई है। शास्त्रकारों और आत्मजनों ने इस तथ्य का पग-पग पर प्रतिपादन किया है।

# आज का सच्चिंतन

मित्रों ! धुलाई के बिना रंगाई निखरती कहाँ है? गलाई के बिना ढलाई किसने कर दिखाई है? मल-मूत्र से सने बच्चे को माता तब ही गोद में उठाती है, जब उसे नहला-धुला कर साफ-सुथरा बना देती है। मैला-गंदला पानी पीने के काम कहाँ आता है? मैले दर्पण में छवि कहाँ दीख पड़ती है? जलते अंगारे पर यदि राख की परत जम जाए, तो न उसमें गर्मी का आभास होता है, न चमक का। बादलों से ढक जाने पर सूर्य-चन्द्र तक अपना प्रकाश धरती तक नहीं पहुँचा पाते। कुहासा छा जाने पर दिन में भी लगभग रात जैसा अंधेरा छा जाता है और कुछ दूरी की वस्तुएँ तक सूझ नहीं पड़तीं।

इन्हीं सब उदाहरणों को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि मनुष्य यदि लोभ की हथकड़ियों, मोह की बेड़ियों और अहंकार की जंजीरों में जकड़ा हुआ रहे, तो उसकी समस्त क्षमताएँ नाकारा बन कर रह जाएँगी। बंधुआ मजदूर रस्सी में बंधे पशुओं की तरह बाधित और विवश बने रहते हैं। वे अपना मौलिक पराक्रम गवाँ बैठते हैं और उसी प्रकार चलने-करने के लिए विवश होते हैं, जैसा कि बाँधने वाला उन्हें चलने के लिए दबाता-धमकाता है। कठपुतलियाँ अपनी मर्जी से न उठ सकती हैं, न चल सकती हैं। मात्र मदारी ही उन्हें नचाता-कुदाता है।

# आज का सच्चिंतन

मित्रो ! तृष्णाओं की खाई इतनी गहरी है, जिसे रावण, हिरण्यकश्यपु, वृत्तासुर जैसे प्रबल पराक्रमी भी समूचा पौरुष दाँव पर लगा देने के बाद भी पाट सकने में तनिक भी समर्थ न हुए। सिकंदर जैसे सफलताओं के धनी भी मुट्ठी बाँधे आए और हाथ पसारे चले गए। अहंकार प्रदर्शित करने के दर्प में, संसार भर को चुनौती देने और ताल ठोकने वाले किसी समय के दुर्दान्त दैत्यों में से अब कोई कहीं दीख नहीं पड़ता। राजाओं के मणि-मुक्तकों से जड़े राजमुकुट और सिंहासन, न जाने धराशायी होकर कहाँ धूल चाट रहे होंगे? यह करतूतें उन्हीं पैशाचिक दुष्प्रवृत्तियों की हैं, जो मनुष्य पर उन्माद की तरह हैं और उसकी बहुमूल्य जीवन-सम्पदा को कौड़ी के मोल गँवा देने के लिए दिग्भ्रमित करती रहती हैं।

स्वार्थ सिद्धि की ललक-लिप्सा वस्तुतः अनर्थ के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगाने नहीं देती। स्थिति उस जादुई राजमहल जैसी बन जाती है, जिसमें प्रवेश करने पर दुर्योधन को जल के स्थान पर थल और थल के स्थान पर जल दीखने लगा था। जो करना चाहिए, उसका निरन्तर तिरस्कार-बहिष्कार ही होता रहता है और अपनी चतुरता की डींग हाँकने वाले निरन्तर वह करते रहते हैं, जो नहीं ही करना चाहिए। इस मानसिकता को, व्यामोह का सम्मोहन नाम देने के अतिरिक्त और क्या कहा जाए? क्या यह दुर्गति और दुर्गंध से भरी दुर्दशा ही मानव जीवन की नियति है?

जो हो, पर वास्तविकता यही है कि औसत आदमी इन्हीं परिस्थितियों में स्वेच्छापूर्वक या बाधित होकर रहने के लिए अभ्यस्त पाया जाता है। हानि को लाभ और लाभ को हानि समझने वालों के हाथ वैसी ही दुर्गति लग सकती है, जैसी कि अधिकांश लोगों के गले बँधी और छाती पर चढ़ी दिखाई देती है।

# आज का सद्चिंतन

बेटे ! मैं अपने जीवन भर प्रयोग करता रहा हूँ। कौन-कौन से प्रयोग किये हैं ?

पहले ब्राह्मण बनने का प्रयोग किया कि ब्राह्मणत्व के क्या-क्या चमत्कार हो सकते हैं ? मैंने उसे अपने जीवन में धारण करके देखा है और पाया है कि इसमें सफलताएँ भी हैं तथा चमत्कार भी हैं। ब्राह्मण जीवन किसे कहते हैं ? किफायतसारी जीवन को कहते हैं। ब्राह्मण उसे कहते हैं जो अपना खर्च कम से कम में चला सकता हो तथा अधिक से अधिक अपना धन, अक्ल, मेहनत, समाज में लगा सकता है, जिससे उसके जीवन का लक्ष्य, समाज का लक्ष्य पूरा होता हो। जिस आदमी के पास कुछ बचता ही नहीं है, वह समाज को क्या देगा ?

हमें यह कहना होगा कि अध्यात्मवादी बनने के लिए किफायतसारी बनना होगा, ब्राह्मण बनना होगा। हमने इसका प्रयोग किया है तथा लाभ पाया है। हमने अपना खाने-पीने तथा रहने का ढंग ब्राह्मण का रखा है। अपने जमीन के बाबत जो कुछ हमें मिला था, उसे गायत्री तपोभूमि के लिए दान कर दिया। मैंने अपनी पत्नी से पेशवा ब्राह्मणों की उपमा देते हुए कहा कि आपको भी यह जीवन जीना चाहिए। पेशवा के राम टांक ने अपने गुरु की पत्नी के आदेश पर सब कुछ दे दिया था। इन्होंने भी अपने सारे गहने गायत्री तपोभूमि के लिए लगा दिये। पैसों की दृष्टि से हम खाली हाथ हो गये, परन्तु शक्ति बहुत मिल गई।

# आज का सदर्चिंतन

# आज का सदर्चिंतन

# आज का सद्चिंतन

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया। व्याख्यान कला अलग है। मंच पर तो सभी शानदार मालूम पड़ते हैं। प्रत्यक्ष सम्पर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है। जो प्राण वाणी में है, वही परस्पर चर्चा-व्यवहार में परिलक्षित होता है। वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है। व्यक्तित्व बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है। प्याज खाने वाले के मुँह से, शराब पीने वाले मसूड़े के मुँह से जो बदबू आती है, वाणी की कठोरता ठीक इसी प्रकार मुँह से निकलती है। अशिष्टता छिप नहीं सकती। यह वाणी से पता चल ही जाती है। अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो। तुम्हें प्रशंसा करना आता ही नहीं, मात्र निन्दा करना आता है। व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो। तुरन्त तुम्हें परिणाम मिलना चालू हो जाएँगे। वाणी की विनम्रता का अर्थ चाटुकारिता नहीं है। फिर समझो इस बात को, कतई मतलब नहीं है चापलूसी-वाणी की मिठास से। दोनों नितान्त भिन्न चीजें हैं। दूसरों की अच्छाइयों की तारीफ करना, मीठी बोलना एक ऐसा सद्गुण है, जो व्यक्ति को चुम्बक की तरह खींचता व अपना बनाता है। दूसरे सभी तुम्हारे अपने बन जाएँगे, यदि तुम यह गुण अपने अन्दर पैदा कर लो। इसके लिए अन्तः के अहंकार को गलाओ। अपनी इच्छा, बड़प्पन, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है, जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनन्त फलश्रुतियाँ सुनाई हैं। अपनी इमेज विनम्र से विनम्र बनाओ। मैनेजर की, इंचार्ज की, बॉस की नहीं, बल्कि स्वयंसेवक की। जो स्वयंसेवक जितना बड़ा है, वह उतना ही विनम्र है, उतना ही महान बनने के बीजांकुर उसमें हैं। तुम सबमें वे मौजूद हैं। अहं की टकराहट बन्द होते ही उन्हें अन्दर टटोलो कि तुमने समर्पण किया है कि नहीं। पर्यवेक्षण इस श्रावणी पर्वपर अपने अन्तरंग का करो।

# आज का सच्चितन

ç×~æ ! ã×æÙè ° - æ ãè ×ãžßæ - æÿæ ã ç - æ ã× âãdÖÁæ ßæÜ  
 âãdàæèáæ ÂLá ÖÙÙæ çãì ãð ì× âõ ã×æÙè ÖÁæ ÖÙ Áæ¥æ,  
 ã×æÙ ¥» ÖÙ Áæ¥æ, Øã ã×æÙè ×Ù - æè Öæ ì ãð »Læ-çàæcØ ° - æ -  
 Îâú â ¥ÂÙ ×Ù - æè Öæ ì - ãã - ðú ãË - æ ãæ Áæ ì ãð ã×Ù ¥ÂÙ ×Ù  
 - æè Öæ ì ì×â - ã Îèð ¥Ö ì× Âú çÜÖú ã ç - æ ì× ç - æ ìÙæ ã×æÙ  
 ÖÙ ì ãæ? Âç ì - Â^Ùè - æè ìúã, »Læ ß çàæcØ - æè ¥æ^×æ × Öè ÂúsÂú  
 žØã ãæ ìæ ã, ÎæÙæ ° - æ - Îâú â fæËæ-ç×Ü - ðú ° - æ ãæ Áæ ì ãð  
 â×Â±æ - æ ¥ í ã - Îæ - æè ¥çSì^ß ç×Åæ - ðú ° - æ ãæ ÁæÙæð ì× Öè  
 ¥ÂÙæ ¥çS^æ^ß ç×Åæ - ðú ã×æÙ âæ í ç×Üæ Îæ ß ¥ÂÙè ÿæ¼  
 ×ãžßæ - æÿæ¥æ - æè ã×æÙè ¥Ù<ì ¥æšØæç^× - æ ×ãžßæ - æÿæ¥æ ×  
 çßÜèÜ - ðú Îæð çÁâ - æè ¥ã çÁ<Îæ ã, ßã ßàØæ ãð çÁâ - æè ¥ã  
 ç×Å »Øæ, ßã Âçß~æ ìæ ãð Î¹ Ùæ ã ç - æ ã×æÙè ÖÁæ, ¥æ¹, ×çSìc - æ  
 ÖÙÙ - æ çÜ° ì× ç - æ ìÙæ ¥ÂÙ ¥ã - æè »Üæ Âæ ì ãæ? şâ - æ çÜ°  
 çÜúã - æÙè ÖÙæð SßæçÖ×æÙè ìæ ãæÙæ çãã°, Âú çÜúã - æÙè ÖÙ - ðúð  
 çÜúã - æÙè - æè Â í × ççq ã ßæ±æè - æè ç×Ææâð

ßæ±æè ÅØçž^æ^ß - æè ãç íØæú ãð âæ×Ù ßæÜ Âú ßæú - ðúÙæ ãæ ìæ  
 ìÜßæú Ùãè, - ðÜæş Ùãè, çãž×ì - æè ÂÀ ãæ ìè ãð çãž×ì Ù ãæ ìæ  
 ãæ í × ìÜßæú Öè ãæ, ìæ Ö - æÙ ãð ØçÎ ßæ±æè âãè ã ìæ ìžãæúæ  
 ÅØçž^æ^ß Áèß<ì ãæ Áæ°»æ, ÖæÜÜ Ü»»æ ß âæ×Ù ßæÜ - æè ¥ÂÙæ  
 ÖÙæ Ü»æð ¥ÂÙè çßÜ×ìæ, Îâúæ - æè âž×æÙ ß ÖæÜÜ × ç×Ææâ,  
 Øãè ÅØçžì^ß - æè Â×¹ ãç íØæú ãð şÜ - æè âãè ©ÂØæ» - ðúæ» ìæ  
 ÅØçž^æ^ß ßÁÜÎæú ÖÙ»æð

# आज का सद्चिंतन

साधना किसे कहते हैं आपको मालूम नहीं? आप हनुमान जी की पूजा करते हैं, सन्तोषी माता की पूजा करते हैं। यह मन्त्र है, न यन्त्र है, न पूजा है। आप हनुमान जी या सन्तोषी माता को साधते हैं। अरे पहले अपने आपको तो साधिये न, पर यह जो जादूगरी आप करते हैं, वह बदमाशी के सिवा कुछ नहीं है। अगर आप पूजा-उपासना करते हैं, तो ठीक, यह आपकी मर्जी है, पर यह न तो कोई मन्त्र जप है, न भजन है, यह मात्र धूर्तगीरी है। पूजा के नाम पर यदि आप ऐसी बदमाशी करते हैं तो आपकी मर्जी, पर इससे कुछ होने वाला नहीं है। पहले आप समर्पण करना सीखिये, यह मोटी-मोटी बातें थीं जो हमने किसी तरह से आपसे कह दीं।

हमारे गुरुजी की यही मर्जी है कि हम आपमें से-हर आदमी में से ब्राह्मण तथा सन्त को जिन्दा करें और हम यही चाहते हैं कि अगर हमारे अन्दर बल हो तथा आपके अन्दर ब्राह्मणत्व तथा साधु हो तो वह जिन्दा हो जाए।

# आज का सद्चिंतन

हमारे तुम सबके बीच आने का एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जाएँ। व्यक्ति होते तो यह सारा समाज नया हो जाता। सारे समाज का कायाकल्प हो जाता। पचास आदमी गाँधी के, बुद्ध के साथ थे। वे युग-परिवर्तन कर सके, क्योंकि उनके पास काम के इनसान थे। विवेकानन्द के पास निवेदिता व कुछ काम के व्यक्ति थे। आज जहाँ देखो, वहीं जानवर नजर आते हैं। यदि काम के इनसान होते तो जमीन पलट दी गई होती। तुम सब यहाँ आए हो तो काम के आदमी बन जाओ। हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोलकर रख दिया है। नतीजा यह कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े। तुम यदि सही अर्थों में जुड़े हो तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोकसेवी का बना लो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

यहाँ शान्तिकुंज में न्यूनतम पाँच सौ कार्यकर्त्ताओं की, आदमियों की सही मायने में जरूरत है। \_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

# आज का सद्चिंतन

आप अपने ब्राह्मणत्व को जगा दीजिये, साधु को जगा दीजिये ताकि आप अपनी नाव स्वयं पार कर सकें, अन्यथा हम यही कहेंगे कि शायद हमारा तप कम है नहीं तो कहीं न कहीं हमें ब्राह्मण, साधु मिल ही जाते। आपके पास धन नहीं तो अपनी भावना, विचार, श्रद्धा तो समाज में बिखेर ही सकते हैं। वही बिखेरिये, सन्त बनकर अपना परिचय दीजिये। सन्त दानी होता है, सन्त उदार होता है।

हमारा मन था कि अपने बचे हुए शेष दिनों में ब्राह्मण तथा सन्त का काम अधिक से अधिक कर सकूँ। लोगों की मध्यमावाणी से, परावाणी से अधिक से अधिक सेवा कर सकूँ। यह हमारा मन है, मैं आप को एक ही बात कह सकता हूँ कि आप अपने को निचोड़िये-निचोड़िये, बचत कीजिये। आपके श्रम, समय, धन और विचारणा-भावना की समाज को जरूरत है, संस्कृति को जरूरत है। इसे विलासिता में खर्च मत कीजिये। अगर किसी में ब्राह्मणत्व एवं सन्त जिन्दा है तो उसे निचोड़िये। उसे आप बिखेर दीजिये। हमने प्रार्थना की है कि यदि आप लोगों में कहीं भी किसी भी कोने में यदि ब्राह्मणत्व या सन्त जिन्दा हो तो वह जग जाये। उपासना-साधना के नाम पर आप जादूगरी बन्द कीजिये। देवता को गुमराह करने वाली, मनोकामना सिद्ध करने वाली पूजा बन्द कीजिए।

# आज का सद्चिंतन

ईसाई मिशन की महिलाएँ भी घर-घर जाती हैं और यह कहती हैं कि हमारी एक पैसा की किताब जरूर खरीदिये। अगर अच्छी न लगे तो कल मैं वापस ले लूँगी। अरे यह किताब बेचना नहीं है बाबा, मेरे विचार को घर-घर पहुँचाना है। आप लोगों के जिम्मे हमारा एक सूत्रीय कार्यक्रम है। आप जाइये, अपने को निचोड़िये। आपका घर का खर्च यदि १००० रुपये है तो निचोड़िये इसको और उसमें से बचत को ज्ञानयज्ञ के लिए खर्च कीजिये। हमारी आग को बिखेर दीजिये, वातावरण को गरम कर दीजिये, उससे अज्ञानता को जला दीजिये। आप लोग जाइये और अपने आपको निचोड़िये। ज्ञानघट का पैसा खर्च कीजिये तो क्या हम अपनी बीबी को बेच दें? बच्चे को बेच दें? चुप कंजूस कहीं के ऊपर से कहते हैं हम गरीब हैं। आप गरीब नहीं कंजूस हैं।

हर आदमी के ऊपर हमारा आक्रोश है। हमें आग लग रही है और आप निचोड़ते नहीं हैं। इनसान का ईमान, व्यक्तित्व समाप्त हो रहा है। आज शक्तिपीठें, प्रज्ञापीठें जितनी बढ़ती जा रही हैं, उतना ही आदमी का अहंकार बढ़ता जा रहा है। आपस में लड़ाई-झगड़े बढ़ते जा रहे हैं। सब हविश के मालिक बनते जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि अब पन्द्रह-बीस हजार में फूस के शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ बन जाते तो कम से कम लोगों का राग-द्वेष, अहंकार तो नहीं बढ़ता। आज आप लोगों से एक ही निवेदन कि आप हमारी आग स्वयं बिखेरिये, नौकरी से नहीं, सेवा से। आप जाइये एवं हमारा साहित्य पढ़िये तथा लोगों को पढ़ाइये और हम क्या कहना चाहते थे। हम दो ही बात आपसे कहना चाहते हैं- पहली हमारी आग को घर-घर पहुँचाइये, दूसरी ब्राह्मण एवं सन्त को जिन्दा कीजिये ताकि हमारा प्याऊ एवं अस्पताल चल सके, ताकि लोगों को-अपने बच्चों को खिला सकें तथा उन्हें जिन्दा रख सकें तथा मरी हुई संस्कृति को जिन्दा कर सकें। आप ११ माला जप करते हैं-आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। यह जादूगरी नहीं है। किसी माला में कोई जादू नहीं है। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि मनोकामना की मालाएँ, जादूगरी की माला में आग लगा दीजिये, आप मनोकामना की माला, जादूगरी की माला, आज्ञाचक्र जाग्रत करने की माला को पानी में बहा दीजिये।

# आज का सद्चिंतन

ऋषियों ने अपने रक्त को एक घड़े में भरा था, जिससे सीताजी उत्पन्न हुई थीं। आपको भी संस्कृति की सीता की खोज करनी है। समाज के लिए, संस्कृति के लिए आप भी अपना समय, अपना पैसा निकालिये, अपना रक्त निकालिये। आप अपने आप को निचोड़िये तो सही। निचोड़ने के नाम पर अँगूठा दिखाते हैं, त्याग के नाम पर जीभ निकालते हैं। बकवास के नाम पर, घूमने के नाम पर बिना मतलब के आडम्बर बना रखे हैं। अपने आपको निचोड़िये। आप अपने को यदि निचोड़ेंगे तो फिर देख लेना आप क्या बन जाते हैं? हमने अपने आपको निचोड़ा तो देखिये क्या बन गये?

अगर आपने अपने आपको निचोड़ दिया तो \_\_\_\_\_

[illegible]

# आज का सच्चिंतन

आप अकेले चलें। हमारे गुरु अकेले चले हैं। हम अकेले चले हैं। आप भी अकेले चलिये। संगठन के फेर में मत पड़िये। आपको बोलना नहीं आता है। आप कहते हैं कि व्याख्यान सिखा दीजिये। आप हैं कौन? हमें बतलाइये। भाषण से क्या होगा? आप हमारी बात मानिये। आपको बोलना नहीं आता है तो हम क्या करें? आप पोस्टमैन का काम करिये। हम बोलना सिखा देंगे। लड़कियों को सिखा दिया था। महाराज जी हमें भी बोलना सिखा दीजिए। आप त्याग करके तो हमें बतलाइये। जवाहरलाल नेहरू एवं शास्त्री जी को गाँधी जी ने खादी बेचने को कहा था। वे घर-घर जाकर खादी बेचते थे। घर-घर धकेल गाड़ी लेकर जाते थे तथा लोगों से कहते थे कि आप खादी पहनिये तो क्या वे खादी बेचते थे? हाँ बेटे, खादी बेचते थे।

आप अपने आप को निचोड़िये। ये हमारा बेटा, यह हमारी पत्नी। देखना यही तुझे ऐसा मारेंगे कि तुझे याद रहेगा। हमारा बेटा, हमारी पत्नी-यही रटता रहेगा कि कुछ समाज के लिए, भगवान् के लिए भी करेगा। नहीं गुरुजी हम तो हनुमान चालीस पढ़ते हैं, गायत्री चालीसा पढ़ते हैं। अरे स्वार्थी कहीं का, तेरी तो अक्ल खराब हो गयी है। अहंकार बढ़ गया है। हमने आपमें से हर किसी को कहा है कि आप ब्राह्मण बनिये। नहीं गुरुजी, हमने तो चन्दा इकट्ठा कर लिया, तो हम क्या करेंगे इसका? आप आदमी तो बनें पहले। आप आदमी बनना सीखें। आप घटियापन छोड़िये, सुबह से शाम तक काम कीजिये। पात्रता बढ़ाइये।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इसी काम के लिए हम समय लगाना चाहते हैं । सवाल हमारे समय का है, आप तो केवल पूजा के पीछे पड़े हैं । देवी-देवता के पीछे लगे हैं कि मनोकामना पूरी हो जाए । किसी दिन मेरे दिमाग में गुस्सा आ गया तो पूजा को ही बन्द कर दूँगा और कहूँगा कि इसी के पीछे पड़ा है । पूजा के चक्कर में पड़ा है । पूजा से आज्ञाचक्र जगेगा । सुन लेना एक दिन मैं पूजा को गालियाँ दूँगा, यदि यही रटता रहा कि सब कुछ पूजा से मिल जाएगा और यही समझता रहा कि माला घुमाने को पूजा कहते हैं । देवी-देवता को पकड़ने का नाम पूजा है । अज्ञानी लोग, भ्रमित लोग मनुष्य को दबाने तथा चक्कर में डालने के नाम को पूजा कहते हैं । देवी-देवताओं को पकड़ने के लिए, मनोकामना पूर्ण करने के लिए जो आपने पूजा का स्वरूप बना रखा है, वह बहुत ही घटिया रूप है । पूजा ऐसी नहीं हो सकती, ध्यान ऐसा नहीं हो सकता, जैसा कि आप लोगों ने समझा रखा है कि अगर बत्तियाँ चढ़ाएँगे, चावल चढ़ाएँगे, शक्कर की गोली चढ़ाएँगे और मनोकामना पूर्ण हो जाएगी । इतना घटिया अध्यात्म नहीं हो सकता है जैसा कि आप लोगों ने सोच रखा है । आपकी पूजा घटिया, आपके देवता घटिया सब घटिया हैं । इसको समझना चाहिए ।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हम एक बात अवश्य कहेंगे कि \_\_\_\_\_

**वाङ्मय-नं-६८-पृष्ठ-१.११**

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हम अपने ब्राह्मण को फिर जिन्दा करेंगे। सन्त दानी होता है। आदमी को दानी बनने के लिए सन्त बनना होगा। हम ब्राह्मण और सन्त को पुनः जिन्दा करेंगे। ब्राह्मण जमा करता है, सन्त उसे खर्च कर देता है। हमने निश्चय किया है, विचार किया है कि जिन्दगी के इन आखिरी क्षणों में अपने ब्राह्मण एवं सन्त को साधकर सबके लिए एक मिसाल स्थापित कर दूँ।

क्या हम जिन्दगी भर, अपने बीबी-बच्चों को ही खिलाते रहेंगे? जिस पर मनुष्य का भविष्य टिका है, क्या उसके लिए कुछ नहीं कर सकेंगे? अपने लिये अधिक, समाज के लिए इतना कम। यह कैसे होगा? मेरे गुरु ने दुखियारों की सेवा, समाज की सेवा कम की है, परन्तु उसने सारे विश्व को हिला दिया है। दूसरों के दुःखों को देखकर यह सोचते हैं कि इसके लिए हम क्या करें? उस समय मैं रो पड़ता हूँ तथा उसे सहायता किये बिना मेरा मन नहीं मानता है। यह क्रम चलेगा ही। परन्तु एक काम और है, इनसान को ऊँचा उठाने का। हम सोचते हैं कि और यदि यह काम भी किया होता तो मजा आ जाता। आप जितने लोग बैठे हैं, अगर आपको हम फुटबॉल की तरह ऊँचे उछाल दिये होते तो मजा आ जाता। आप लोगों को उछाल दें तो आप में से हर एक आदमी हनुमान, ऋषि विवेकानन्द दिखाई पड़ेगा। आप लोगों में से एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो रैदास की तुलना में गरीब हो। परन्तु आप इतने भारी हैं कि आपके सेल्स काम नहीं कर रहे हैं, आपके हाथ उठ नहीं पा रहे हैं। मानसिक दृष्टि से एक-एक बेड़ियाँ इतनी भारी हैं जैसे हजार मन की हों। ऐसे में आपको कैसे उठाऊँ? आपकी बेड़ियों को मैं काटूँगा क्योंकि हमारे बाद इन बच्चों को खिलाने वाला, नर्सिंगहोम चलाने वाला कहाँ से लायेंगे? यह अस्पताल बन्द हो जाने पर आपके अनुभव के बिना इनका ऑपरेशन कौन करेगा? इनसान को उठाया नहीं जा सका तो बात कैसे बनेगी?

# आज का सच्चिदानन्द

मित्रो ! एक ट्रेनिंग की व्यवस्था हमने अपने शान्तिकुंज में की है, ताकि आप समाज में छाई असुरता से लड़ सकें। शान्तिकुंज को पहले से भी हमारा तीस गुना करने का मन था, किन्तु अब बहुत दिनों से नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय, यही हमारे दिमाग में घूमते रहते हैं। हमें यही सपना आता रहता है कि नालन्दा, जिसमें हजारों धर्म-संस्कृति प्रचारक तैयार किये थे एवं तक्षशिला जिसमें हजारों संस्कृति प्रचारक तैयार किये गये थे, यहाँ पर बने। धर्म का नाम तो मैं अब नहीं लूँगा। यह नाम बहुत बदनाम हो गया है। मैं समाज-सेवा की बात आपसे कहूँगा। यह कहूँगा कि आपकी महानता की वृद्धि के लिए सेवा बेहद आवश्यक है और जब तक आप समाज की सेवा नहीं करेंगे तब तक आप उन्नतिशील नहीं बनेंगे? आपकी आत्मा में सन्तोष और शान्ति का निवास नहीं होगा।

आत्मसन्तोष के अलावा समाज का सहयोग व भगवान् का अनुग्रह कैसे मिल सकता है, शानदार जिन्दगी कैसे जीनी चाहिए? इसके लिए हमारे यहाँ ट्रेनिंग चलती है। ट्रेनिंग तो पहले भी चलती थी। नौ दिन की, पाँच दिन व एक माह की, पर अब हमने सारे के सारे शान्तिकुंज को विश्वविद्यालय के रूप में परिणत कर दिया है। कानूनन तो यह विश्वविद्यालय नहीं है, क्योंकि विश्वविद्यालय के लिए जो खानापूर्ति की जाती है, वह बहुत बड़ी है लेकिन पुराने समय में नालन्दा में कोई खानापूरी नहीं हुई थी ये गवर्नमेण्ट से कोई सम्बन्धित नहीं हुए थे। हमारा यह विश्वविद्यालय इसी प्रकार का है।

# आज का सद्चिंतन

मित्रों! कोई आदमी किसी के यहाँ नौकरी करता है, खेती-बाड़ी करता है, तो उसके बाल-बच्चों के गुजारा करने का इंतजाम वह आदमी करता है कि नहीं, जिसने उसको नौकर रखा है। आपको नौकर तो हमने बनाकर नहीं रखा है, लेकिन अपना कुटुम्बी बनाकर रखा है। तो आपके कुटुम्ब की-जिसमें छोटे बच्चे भी हैं, घर वाले हैं और दूसरे लोग हैं, उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी हमारी है। आपके शरीर की देखभाल हम करेंगे। आपके पैसे की देखभाल हम करेंगे। आपके मन की देखभाल हम करेंगे। और कोई मुसीबत आपके ऊपर आएगी, तो हम आपके सामने खड़े होंगे और यह कहेंगे तथा करेंगे कि ये मुसीबत पहले हमारे ऊपर आए, बाद में इन लोगों के ऊपर आए।

साथियों! इस गुरु पूर्णिमा की पूर्व वेला में हमारा सभी परिजनों के नाम यह संदेश और आश्वासन है, आप इसे याद करके रखिए कि आप देवता थे और अब सामान्य मनुष्य के रूप में हैं। आपका जन्म विशेष काम के लिए हुआ है और वही विशेष काम आपको करना है और बच्चों का गुजारा भी करना है। अगर कोई मुसीबत आएगी, तो आपकी मदद हम करेंगे। हमारी सहायता हमारा गुरु करता है। हमने अपने जीवन में बहुत बड़े-बड़े काम किये हैं और बड़े कामों में हमारे गुरु ने हमारी मदद की है, हमारे भगवान् ने हमारी मदद की है। अगर आपके सामने कोई दिक्कत की बात होगी, कठिनाई की बात होगी, हैरानी की बात होगी, तो हम आपकी मदद करेंगे, सहायता करेंगे। यह हमारा दूसरा आश्वासन याद रखिये।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आपको तीसरा संदेश यह है कि आप सब लोग संगठित होकर रहें, मिल-जुलकर रहें। प्रेम से रहें। भाई-चारा निभाएँ और मिशन के काम को आगे बढ़ाएँ। जो भी कार्य आगे बढ़ेगा, मिल-जुलकर ही आगे बढ़ेगा। बुहारी एक जगह पर एक साथ बँधी रहती है, तो झाड़ने में समर्थ होती है और सींके बिखेर दी जायें, तो किसी काम की नहीं रहतीं। जिस तरीके से धागों के ताने-बाने मिले हुए होते हैं, तो उससे कपड़ा बन जाता है। अगर धागों को निकालकर अलग-अलग बिखेर दें, तो मुश्किल पड़ेगी। आप लोग सब गायत्री परिवार के सदस्य इस समय इस तरह संगठित होकर रहें, जिससे मिशन का काम ठण्डा न होने पावे। कहीं भी हिन्दुस्तान में, या जहाँ कहीं भी गायत्री परिवार हो, वहाँ का काम ढीला न पड़ने पाये, शिथिल न होने पाये। बराबर उत्साह बना रहे और आगे-आगे बढ़ते जाने की स्कीमें चालू रखी जाती रहें। यह तीसरा संदेश है।

# आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आज गुरु पूर्णिमा का त्यौहार है। हम आपको बता रहे हैं कि भगवान का नया अवतार होने जा रहा है। आज की परिस्थितियों के अनुरूप यह अवतार है। जब-जब दुष्टता बढ़ती है तब-तब देश-काल की परिस्थितियों के अनुरूप भगवान अवतार के रूप में जन्म लेते हैं। आज आस्थाओं में, जन-जन के मन-मन में असुर घुस गया है। इसे विचारों की विकृति कह सकते हैं। एक किशत आज के अवतार की आज से २५०० वर्ष पूर्व बुद्ध के रूप में, विचारशीलता के रूप में आई थी। वही प्रज्ञा की, विवेक की, विचारों की वेला अब पुनः आई है। वह है गायत्री मंत्र ऋतंभरा-प्रज्ञा के रूप में। यह अवतार भी हलचलें पैदा करेगा। विचार क्रांति के रूप में जो आ रही है वह युगशक्ति गायत्री है। यह गायत्री हिंदुस्तान मात्र की नहीं, सारे विश्व की है। नए विश्व की माइक्रोफिल्म इसमें छिपी पड़ी है। गायत्री मंत्र विश्व मंत्र है। व्यक्ति का अंतरा व बहिरंग बदलने वाले बीज इस मंत्र के अंदर छिपे पड़े हैं। यदि आपको यह बात समझ में आ गई तो आप हमारे साथ नवयुग का स्वागत करने में जुट जाएँगे। हम अपने लिए एक ही नाम बताते हैं-मुर्गा। मुर्गा वह जो प्रभात के आगमन का उद्घोष करता है। गायत्री ने हमें फिर मुर्गा बना दिया है। आइए जोर से उद्घोष करें कि नव प्रभात आ रहा है, नया युग आ रहा है, युग शक्ति का अवतरण हो रहा है। कुकुडूँ.....। यह तो मुर्गा करता है। हम नए युग की अगवानी करें।

# आज का सच्चितन

ç×~æ ! Ìžãè - æ - æžãæÚ ß Ìžãè - æ ç - æ ÕÙÙæ ãð ã×Ù Ìæ ¥Ù»É âæÙæ, çæÎè  
ÉÚæ Ü»æ - æÚ Ù<sup>1</sup> æ ã, Ìžãè - æ âæçæ ÕÙ - æÚ âãè çâž - æ ÉæÜÙæ ãð âæçæ âãè ãæ»æ  
Ìæ çâž - æ Õè Æè - æ ¥æ - ææÚ - æ ÕÙ»ð ¥æÁ ÎçÙøæ × ÂæçÅøæ Ìæ ÕãÌ ã, ÂÚ ç - æâè  
- æ Âæâ - æø - æžææ Ùãè ãð òÜÕÚÓ âÕ - æ Âæâ ã, ÂÚ â×çÂÌ - æø - æžææ Áæ âæçæ  
ÕÙÌæ ã ß - æ§ - ææ ÕÙæ ÎÌæ ã ¥ÂÙ Áææ, - æãè Õè Ùãè ãð ã×æÙè øã çÎÜè  
žßæçãàæ ã ç - æ ã× ¥ÂÙ ÂèÀ Àæç - æÚ Áæ°ð §Ù âÖè - ææ âãè ¥ Íæ × òçæ§ó ° - æ  
âæçæ ÕÙÙæ Âç»æ Ì Íæ ßãè âÕâ ×çà - æÜ - ææ× ãð Úæ ×ÅçÚøÜ Ìæ ÉÚæ - æãè Õè  
ç×Ü â - æ Ìæ ãð ÂÚ òçæ§ó - æãè - æãè ç×Ü ÂæÌè ãð ÿæD - æø - æžææ ÿæD òçæ§ó ÕÙÌæ  
ãð Ì× âÕâ ¥Âÿææ ã ç - æ ¥ÂÙ »L - æè ÌÚã ° - æ ÿæD âæçæ ÕÙæ»ð

Ì×â Îæ ¥æÚ ¥Âÿææ° ã-° - æ ÿæ× - ææ âž×æÙð øã Öæç Ì - æ Á»Ì - ææ ÎßÌæ ãð  
×æÌè-ãèÚ ÿæ× âãè çÙ - æÜ Ìæ ãð ÎâÚè ¥Âÿææ øã ç - æ âßæ-Õçh - æ çß - ææâ - æ  
çÜ° âã - æçÚ Ìæ - ææ ¥žøæâð â»ÆÙ àæçžÌ âã - æçÚ Ìæ âãè ÂãÜ Õè ÕÉè ã,  
¥æ» Õè §âè â ÕÉ»èð

ã×æÚ ÚæC - ææ ÎÖæ,ø øã ã ç - æ ÿæ× - æè ×ãžææ ã×Ù â×Ùæè Ùãèð ÿæ× - ææ ×ægæ  
§â âÕ× ¥âè× ãð ã×Ù - æÖè ©â - ææ ×Ëøæ - æÜ ç - æøæ ãè Ùãèð ã×æÚæ ÁèßÜ  
çÜÚ<ÌÚ ÿæ× - ææ ãè ÂçÚ±ææ× ãð Õèâ-Õèâ fæ±Å Ì<×øÌæÂß - æ ÿæ× ã×Ù ç - æøæ  
ãð Ì× Õè - æÖè ÿæ× - æè ©Âÿææ ×Ì - æÚÙæð ×æçÜ - æ ÕæÚã fæ±Å - ææ× - æÚ Ìæ ã,  
Ùæ - æÚ ¥æÆ fæ±Å Ì Íæ çæÚ çæÚ fæ±Å - ææ× - æÚ Ìæ ãð Ì× âÕ ¥ÂÙ ¥æÂâ ÂÀæ  
ç - æ ã× ÌèÙæ × â žøæ ã? ÁèÖ çÜæÜ - æ âæ Í - æÆæÚ ÂçÚÿæ× - æÚæ, ¥ÂÙè  
øæ,øÌæ° ÕÉæ¥æ ß çÜÚ ÌÚ Â»çÌ Â Í ÂÚ ÕÉÌ Áæ¥æð

ÎâÚè ÕæÌ âã - æçÚ Ìæ - æè ãð §âè - ææ Â±ø ÂÚ×æ Í, âßæ, ©ÎæÚ Ìæ - æãÌ ãð  
¥ÂÙæ ×Ù âÖè â ç×Üæ¥æð ç×Ü-ÁÜ - æÚ ÚãÙæ, ¥ÂÙæ â<sup>1</sup> ÕæÅÙæ, ÎÑ<sup>1</sup>  
ÕÅÙæ âè<sup>1</sup> æð øãè âãè ¥ Íæ × Õæræ±æß - æè âæÎÙæ ãð âæÎ Ì× ¥Öè ÕÙ Ùãè  
ãæð ×Ù â Õæræ±æß - æè âæÎÙæ - æÚæ» Ìæ ÂãÜ Õæræ±æ ÕÙæð âæÎ ¥ÂÙ ¥æÂ  
ÕÙ Áæ¥æ»ð ÂèÜ - æÂç ÂãÜ Ìæ ç - æ Ùãè, ÂÚ ×Ù - ææ ÂèÜæ - æÚ Ùæð âßæÕçh  
- ææ, ÎâÚæ - æ ÂçÌ Âèçæ - ææ, Öæß-âžßÎÙæ - ææ çß - ææâ - æÚÙæ ãè âæÎ Ìæ - ææ  
Á»æÙæ ãð

# आज का सच्चिंतन

मित्रो ! तपस्वी का जीवन जीने के लिए आपको हिम्मत और शक्ति इकट्ठी करनी चाहिए। तपाने के बाद हर चीज मजबूत हो जाती है। कच्ची मिट्टी को जब हम तपाते हैं तो तपाने के बाद मजबूत ईंट बन जाती है। कच्चा लोहा तपाने के बाद स्टेनलेस स्टील बन जाता है। पारे को जब हकीम लोग तपाते हैं तो पूर्ण चंद्रोदय बन जाता है। पानी को गरम करते हैं तो भाप बन जाता है और उससे रेल के बड़े-बड़े इन्जन चलने लगते हैं। कच्चे आम को पकाते हैं तो पका हुआ आम बन जाता है। जब हम वेल्डिंग करते हैं तो लोहे के दो टुकड़े जुड़ जाते हैं। उस पर जब हम शान धरते हैं तो वह हथियार बन जाता है। बेटे! यह सब गलने की निशानियाँ हैं। आपको अपने ऊपर शान धरनी चाहिए और भगवान के साथ वेल्डिंग करनी चाहिए। आपको अपने आप को इतना तपाना चाहिए कि आप पानी न होकर स्टीम भाप बन जाएँ। कौन-सी वाली स्टीम? जो रेलगाड़ी को धकेलती हुई चली जाती है। यह गरमी के बिना नहीं हो सकता। आपको तपस्वी बनने के लिए यही करना चाहिए।

# आज का सच्चितन

००×ã - ¢Ü - ¢ Ø» çÜ×¢±¢ Â^Ø¢ßÌÜ ¥Õ  
 ¼Ìß» â »çÌà¢èÜ ã¢Ü Á¢ Úã¢ ãÐ ©â - ¢ §â  
 ¥çÖØ¢Ü × ÂÕh ¥¢^×¢¥¢ - ¢ ¢×ã^ßÂ±¢ Öç× - ¢  
 ÂSÌÌ - ¢ÚÜè ã¢»èÐ çÁÜ - ¢è ÁÇÌ ¢ ¥¢Ú ¥ÜÎ¢ÚÌ ¢  
 Ü ÀÅ â - ¢ ©ã â×Ø â Å - ¢Ú¢ - ¢Ú ¢Ú-¢Ú ã¢Ü  
 - ¢è ÌØ¢Úè - ¢ÚÜè ã¢»èÐ Öè ¢ - ¢è - ¢§ çS Í çÌ ÜãèÐ  
 Áâ¢ ¥Õ Ì - ¢ ¢ÜÌ ¢ Úã¢ ãÐ ¥¢» Öè ßâ¢ ãè  
 ÉÚ¢ ¢ÜÌ ¢ Úã¢ â - ¢ Ì ¢ ã °â ¢ ç - ¢ âè - ¢ Öè Üãè  
 â¢ ¢Ü ¢ ¢çã°Ð §İÚ Ø¢ ©İÚ ¥ÂÜ ¢ ° - ¢ SÍ ¢Ü  
 çÜØÌ - ¢Ú ÜÜ ¢ ¢çã°Ð ò¥ ¹ ±Ç-...Ø¢ç Ì Ó ÂçÚ ß¢Ú  
 × ÖãÌ ÂØ^ÜÂß - ¢ âS - ¢¢Ú ß¢Ü ÂÕh ¥¢^×¢°  
 ×ËØß¢Ü ×ç±¢Ø¢ - ¢è ÌÚã ° - ¢ç~¢Ì - ¢Ú ° - ¢ ¢Ü ¢  
 × âÁ¢§ ãÐ ©Ü - ¢ ÁèßÜ¢gàØ ÂÚ¢ - ¢ÚÜ - ¢è  
 Öç× - ¢ ¢× Âßà¢ - ¢ÚÜ - ¢ ¢è - ¢ Øãè â×Ø ãÐ  
 §â ¥ßâÚ - ¢ Ü ¢ - ¢ ¢Ü ¢ ¢çã°, žØ¢ç - ¢ Øã  
 ¢ - ¢ ¥<Ì Ì Ñ ÖãÌ ¢×ã»è ÂÇ»èÐÓÓ

# आज का सच्चिंतन

आप अपने त्याग को, अपनी भावना को, केवल भावना को ही नहीं, वरन उस काम को हमेशा याद रखें, जिसके लिए आपने साहस भरा कदम उठाया था। जिन्दगी बड़ी शानदार है, इस तथ्य को आपको समझना चाहिए।

आपको यह समझना चाहिए कि भगवान ने आपको यह जिन्दगी बहुत ही शानदार दी है तथा आप जो काम कर रहे हैं, वह बड़ा ही शानदार है। इसमें करोड़ों लोगों का भाग्य छिपा है। आप यह नहीं समझते हैं, किन्तु हम स्पष्ट रूप से देख रहे हैं। एक इतिहास बनने वाला है। आगामी दिनों गाँधी जी के आंदोलन के बाद कोई कार्यक्रम अगर इस दुनिया में है और अगर कोई उसकी चर्चा होगी, तो वह शांतिकुंज, युग निर्माण योजना का कार्यक्रम होगा। इतना बड़ा तथा महत्वपूर्ण कार्यक्रम कभी बना नहीं तथा कोई ऐसा कार्यक्रम बना भी नहीं सकता है। यह सफल होगा और बिलकुल सफल होगा, हमें पूरा विश्वास है, आपको विश्वास हो या न हो। हम जब भगवान के पास बैठते हैं, तो हमें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास दिलाया जाता है।

आपमें से किसी के मन में यह बात नहीं आनी चाहिए कि यह योजना सफल नहीं होगी। सफल न होने पर हम मारे-मारे फिरेंगे, यह बात भी आपको अपने मन में कभी सोचनी नहीं चाहिए। इस मिशन में आप ऐसे सफल होंगे, जो इतिहास के पन्नों में कभी नहीं आए।

# आज का सच्चिंतन

भारतीय धर्म के अनुसार मनुष्यों को दो बार जन्म लेने वाला होना चाहिए। एक बार जन्म सभी कीट-पतंगों और जीव-जन्तुओं का हुआ करता है। एक बार जन्म का अर्थ है- शरीर का जन्म। शरीर का जन्म का अर्थ है- शरीर से सम्बन्धित रहने वाली इच्छाओं और वासनाओं, कामनाओं और आवश्यकताओं का विकास और उनकी पूर्ति। दूसरा जन्म है- जीवात्मा का जन्म, उद्देश्य का जन्म और परमात्मा के साथ आत्मा को जोड़ देने वाला जन्म। इसी का नाम मनुष्य है। जो मनुष्य पेट के लिए जिया, सन्तान उत्पन्न करने के लिए जिया, वासना और तृष्णा के लिए जिया; वो उसी श्रेणी में भावनात्मक दृष्टि से रखा जा सकता है, जिस श्रेणी में पशु और पक्षियों को रखा गया है, कीड़े और मकोड़ों को रखा गया है। कीड़े, मकोड़ों का भी उद्देश्य यही है- पेट पाले, बच्चा पैदा करे; दूसरा उनके सामने कोई लक्ष्य नहीं, कोई दिशा नहीं, कोई आकांक्षा नहीं, कोई उद्देश्य नहीं। जिन लोगों के सामने यही दो बातें हैं, उनको इसी श्रेणी में गिना जायेगा। चाहे वो विद्वान हों, पढ़े-लिखे हों, लेकिन जिनका अन्तःकरण इन दो ही क्रियाओं के पीछे लगा हुआ है, दो ही महत्वाकांक्षाएँ हैं, उन्हें पशु योनि से आगे कुछ नहीं कह सकते। उनको नर पशु कहा जायेगा।

# आज का सच्चिंतन

भारतीय धर्म की एक बड़ी विशेषता यह है, जिसने नर को पशु की योनि में पैदा होने के लिए इंकार नहीं किया, लेकिन इस बात पर जोर दिया है कि जैसे-जैसे मानवीय चेतना का विकास होना चाहिए, उस हिसाब से उसको मनुष्य के रूप में विकसित होना चाहिए और मनुष्यता की जिम्मेदारियों को अपने सिर पर वहन करना चाहिए। मनुष्य की जिम्मेदारियाँ क्या हैं? मनुष्य की जिम्मेदारियाँ वो जो जीवात्मा की जिम्मेदारी है। भगवान् के उद्देश्यों को लेकर के मनुष्य को पैदा किया गया है, उसको पूरा करने की जिम्मेदारियाँ हैं। भगवान् ने मनुष्य को कुछ विशेष उद्देश्य से बनाया और उसके पीछे उसका विशेष प्रयोजन था। ऐसा न होता, तो जो अन्य कीड़े और मकोड़ों को, जीव और जन्तुओं को सुख-सुविधाएँ दी थीं, उससे ज्यादा मनुष्यों को क्यों दी होतीं?

मनुष्यों को बहुत सुविधाएँ दी गयी हैं। मनुष्यों को बोलना आता है, मनुष्यों को पढ़ना आता है, लिखना आता है, सोचना आता है। उसको इतनी बुद्धि मिली हुई है, जिससे उसने प्रकृति के अनेक रहस्यों को ढूँढ़ करके प्रकृति को अपने अनुकूल बना लिया है और जो सूक्ष्म शक्तियाँ हैं, उससे अपना काम लेना शुरू कर दिया है। जबकि दूसरे जीव और जन्तुओं को प्रकृति की शक्तियों के ऊपर नियंत्रण पाना तो दूर उनका मुकाबला करने की भी सामर्थ्य नहीं है। ठंड पड़ती है, हजारों कीड़े-मकोड़े व मच्छर मर जाते हैं। गर्मी पड़ती है, हजारों कीड़े-मकोड़े मर जाते हैं। प्रकृति का मुकाबला करने तक की शक्ति नहीं है और प्रकृति को अपने बस में करने की शक्ति कहाँ?

ऐसा चिंतन और ऐसा मन और ऐसी विशेषताएँ और ऐसी विभूतियाँ और ऐसी सिद्धियाँ जो मनुष्यों को मिली हैं, उसे मनुष्यों को भगवान् ने अनायास ही नहीं दी हैं। पक्षपाती नहीं है भगवान्। किसी भी जीव के साथ में पक्षपात करे और किसी से न करे, ये कैसे हो सकता है? सारी की सारी योनियाँ और सभी जीव भगवान् को समान रूप से प्यारे थे। क्या कीड़े-मकोड़े क्या मनुष्य? सभी तो उसके बालक हैं। कोई पिता अपने बालकों के साथ क्यों पक्षपात करेगा? किसी को ज्यादा क्यों देगा? किसी को कम क्यों देगा? कोई न्यायशील पिता सामान्य मनुष्य तक ऐसा नहीं कर सकता, तो भगवान् किस तरीके से ऐसा कर सकता है?

# आज का सच्चिंतन

भगवान् ने मनुष्य के साथ ऐसा कोई पक्षपात नहीं किया है, बल्कि उसे अमानत के रूप में कुछ विभूतियाँ दी हैं। जिसको सोचना कहते हैं, जिसको विचारणा कहते हैं, जिसको बोलना कहते हैं, जिसको भावनाएँ कहते हैं, जिसको उसकी विशेषताएँ कहते हैं, सिद्धियाँ-विभूतियाँ कहते हैं। ये सब अमानतें हैं। ये अमानतें मनुष्यों को इसलिए नहीं दी गई हैं कि उनके द्वारा वो सुख-सुविधाएँ कमाये और स्वयं के लिए अपनी ऐय्यासी या विलासिता के साधन इकट्ठे करे और अपना अहंकार पूरा करे। ये सारी की सारी चीजें सिर्फ इसलिए उसको दी गयी हैं कि इन चीजों के माध्यम से वो जो भगवान् का इतना बड़ा विश्व पड़ा हुआ है, उसकी दिक्कतों और कठिनाइयों का समाधान करे और उसे अधिक सुन्दर और सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्न करे। उसके लिए सब अमानतें हैं।

बैंक के खजांची के पास धन रखा रहता है और इसलिए रखा रहता है कि सरकारी प्रयोजनों के लिए इस पैसे को खर्च करे। उसको उतना ही इस्तेमाल करने का हक है, जितना कि उसको वेतन मिलता है। खजाने में अगर लाखों रुपये रखे हों, तो खजांची उन्हें कैसे खर्च कर सकता है? उसे क्यों खर्च करना चाहिए? पुलिस के पास या फौज के पास बहुत सारी बंदूकें और कारतूसें होती हैं वो इसलिए थोड़े ही उसके पास होती हैं कि उसको अपने लिए उनका इस्तेमाल करना चाहिए और चाहे जो तरीका अख्तियार करना चाहिए, ये नहीं हो सकता। कप्तान को और जो फौज का कमांडर है, उसको अपना वेतन लेकर जितनी सुविधाएँ मिली हैं, उसी से काम चलाना चाहिए और बाकी जो उसके पास बहुत सारी सामर्थ्य और शक्ति बंदूक चलाने के लिए मिली है, उसको सिर्फ उसी काम में खर्च करना चाहिए, जिस काम के लिए सरकार ने उसको सौंपा है।

# आज का सच्चिंतन

हमारी सरकार भगवान् है और मनुष्य के पास जो कुछ भी विभूतियाँ, अक्ल और विशेषताएँ हैं, वो अपनी व्यक्तिगत ऐय्यासी और व्यक्तिगत सुविधा और व्यक्तिगत शौक-मौज के लिए नहीं हैं और व्यक्तिगत अहंकार की तृप्ति के लिए नहीं है। इसलिए जो कुछ भी उसको विशेषता दी गई है। उसको उतना बड़ा जिम्मेदार आदमी समझा जाए और जिम्मेदारी उस रूप में निभाए कि सारे के सारे विश्व को सुंदर बनाने में, सुव्यवस्थित बनाने में, समुन्नत बनाने में उसका महान योगदान संभव हो।

बस एक ही उद्देश्य है भगवान् का। इसके आधार पर भगवान् ने मनुष्य को इतना ज्यादा प्यार किया। मनुष्य को उस तरह का मष्तिष्क दिया है जितना कीमती कम्प्यूटर दुनिया में आज तक नहीं बना। करोड़ों रुपये की कीमत का है मानव मष्तिष्क। मनुष्य की आँखें, मनुष्य के कान, नाक, आँख-वाणी एक से एक चीज ऐसी हैं, जिनकी रुपयों में कीमत नहीं आँकी जाती है। मनुष्य के सोचने का तरीका इतना बेहतरीन है, जिसके ऊपर सारी दुनिया की दौलत न्यौछावर की जा सकती है।

ऐसा कीमती मनुष्य और ऐसा समर्थ मनुष्य- जिस भगवान् ने बनाया है, उस भगवान् की जरूर ये आकांक्षा रही है कि मेरी इस दुनिया को समुन्नत और सुखी बनाने में यह प्राणी मेरे सहायक के रूप में और मेरे कर्मचारी के रूप में, मेरे असिस्टेंट के रूप में मेरे राजकुमार के रूप में काम करेगा और मेरी सृष्टि को समुन्नत रखेगा।

# आज का सद्चिंतन

अपने हिन्दू समाज में जिन मनुष्यों के दो बार जन्म होते हैं। उन्हें द्विज कहते हैं। द्विज माने दुबारा जन्म लेने वाला। दुबारा जन्म क्या? नर-पशु के जीवन से नर-नारायण के जीवन की भूमिका में प्रवेश करना। यही तो दूसरा जन्म है और ये दूसरा जन्म जिस दिन लिया जाता है, जिस दिन ये प्रतिज्ञाएँ ली जाती हैं, उस दिन एक समारोह मनाया जाता है, उत्सव मनाया जाता है, कर्मकाण्ड किया जाता है। उसी का नाम दीक्षा संस्कार है। जो आदमी इस तरह की प्रतिज्ञा के लिए तैयार नहीं होते हैं और ये कहते हैं कि ऊँचे जीवन और आदर्श जीवन से कोई मतलब नहीं रखते हैं, वे कहते हैं कि हम तो केवल पशुओं की तरह से जीवन जियेंगे। हम पेट भरने के लिए जीयेंगे और संतान पैदा करने के लिए जीयेंगे, उनको अपने यहाँ शूद्र कहा गया और शूद्रों को बहिष्कृत माना गया है। इस तरीके से शूद्र वो नहीं हैं, जो किसी जन्म में, किसी कौम में पैदा होते हैं। शूद्र वे हैं, जिनके जीवन में जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता है और जिनका पशुओं की तरह पेट पालना और रोटी कमाना ही लक्ष्य है। वे सब के सब आदमी शूद्र हैं, दूसरे शब्दों में पशु कहें, तो भी कोई हर्ज नहीं है। उसको बहिष्कृत माने जाने की परम्परा उसी तरह की थी, उस जमाने में।

# आज का सद्चिंतन

आज तो जन्म से शूद्र और जन्म से ही ब्राह्मण मानते हैं। जन्म से शूद्र वर्ण का कोई मतलब नहीं है। केवल मतलब ये है कि जो आदमी भौतिक जीवन जीते हैं और आत्मिक जीवन के प्रति जिनका कोई लगाव नहीं है, उन आदमियों का नाम नर-पशु अथवा शूद्र। शूद्र अपने यहाँ एक निंदा की बात थी किसी जमाने में, जब कर्म के आधार पर जब शूद्र और ब्राह्मण बनते थे तब। आज जब जन्म के आधार पर शूद्र और ब्राह्मण मान लिया जाने लगा, तब कोई निंदा की बात नहीं रही और न ही कोई अपमान की बात रही। अब तो सब गुड़-गोबर ही हो गया। लेकिन पुराने जमाने की बात अलग थी। मनुष्य शूद्रता की सीमा से निकल करके जिस दिन ये प्रतिज्ञा लेता है, व्रत लेता है कि मैं आज से मनुष्य होकर के जिऊँगा; उस दिन का समारोह? आत्मा और परमात्मा के साथ मिलने का विवाह जैसा समारोह होती है। उस दिन को मनुष्य जीवन में प्रवेश करने वाला नया जन्म कह लीजिए, उसे आत्मा का परमात्मा के साथ आध्यात्मिक विवाह कह लीजिए।

# आज का सद्चिंतन

# आज का सदर्चिंतन